

TDC III - सर्वेक्षापकता - 1
tutorial class - सर्वेक्षापकता - 2

08

सर्वव्यापकता

व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर का एक महत्वपूर्ण तात्विक गुण सर्वव्यापकता है। इसका आशय है कि ईश्वर सभी जगह विद्यमान है। ईश्वर की पूर्णता एवं असीमितता के लिये उसका सर्वव्यापक होना आवश्यक है परन्तु ईश्वर को सर्वव्यापक मानने में निम्न समस्याएँ होगी-

- (i) भक्त व भगवान के बीच अंतर समाप्त हो जायेगा
- (ii) विश्व में होने वाले परिवर्तन विकास एवं विनाश की व्याख्या नहीं हो पाती
- (iii) निकृष्ट वस्तुओं में भी उनकी विद्यमानता माननी पड़ेगी
- (iv) ईश्वर अभौतिक एवं अशरीरी है ऐसी स्थिति में उनके सर्वव्यापक होने की बात अबोधगम्य हो जाती है
- (v) पाप व पुण्य की व्याख्या नहीं हो पाती

प्रार्थना बनाम निव्यता एवं दयालुता



धार्मिक व्यक्ति ईश्वर की प्रार्थना करता है। यदि ईश्वर प्रार्थना को सुनकर उसके अनुरूप कीर्त कदम उठाता है तो वह परिवर्तनशील हो जायेगा, उसकी निव्यता खंडित हो जायेगी। यदि वह प्रार्थना को सुनने के बाद भी अडबत बना रहता है तो फिर प्रार्थना बेकार हो जाती है। ईश्वर की परम दयालु रूप में स्वीकार करने पर भी प्रश्न चिन्ह उत्पन्न होने लगता है।

प्रश्न

संयुक्त ईश्वर की अवधारणा विरोधाभासी से युक्त है या व्यक्तित्व पूर्ण ईश्वर की अवधारणा विरोधाभासी से युक्त है?

ईश्वर को व्यक्तित्वपूर्ण मानने पर कुछ अन्य समस्याएँ
यदि ईश्वर व्यक्तित्वपूर्ण है तो फिर वह सदसंख्य (Person) के युक्त होना चाहिए। यदि ईश्वर सदसंख्य है तो फिर उसका कुछ